कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



नमक यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन

नमक यात्रा :-

- देश को एकजुट करने के लिए महात्मा गांधी को नमक एक शक्तिशाली प्रतीक दिखाई दिया।
- 31 जनवरी 1930 को उन्होंने वायसराय इरविन को एक खत लिखा। जिसमें उनकी 11 माँगें थीं।
- इनमें से कुछ सामान्य माँगें थीं जबकि कुछ माँगें उद्योगपतियों से लेकर किसानों तक विभिन्न तबक़ों से जुड़ी थीं।
- गांधीजी इन माँगों के ज़रिए समाज के सभी वर्गों को अपने साथ जोड़ना चाहते थे ताकि सभी उनके अभियान में शामिल हो सकें।
- इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण माँग नमक कर को खत्म करने के बारे में थी।
- नमक का अमीर-गरीब, सभी इस्तेमाल करते थे। यह भोजन का एक अभिन्न हिस्सा था।
- इसीलिए नमक पर कर महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन का सबसे दमनकारी पहलू बताया था।
- महात्मा गांधी का यह पत्र एक अल्टीमेटम (चेतावनी) की तरह था। उन्होंने लिखा था कि अगर 11 मार्च तक उनकी माँगें नहीं मानी गईं तो कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ देगी।
- इरविन झुकने को तैयार नहीं थे।
- फलस्वरूप, महात्मा गांधी ने अपने 78 विश्वस्त वॉलंटियरों के साथ नमक यात्रा शुरू कर दी।
- यह यात्रा साबरमती में गांधीजी के आश्रम से 240 मील दूर दांडी नामक कस्बे में खत्म होनी थी जो कि समुद्र तटीय क्षेत्र था।
- गांधीजी की टोली ने 24 दिन तक हर रोज़ लगभग 10 मील का सफर तय किया।
- गांधीजी जहाँ भी रुकते हज़ारों लोग उन्हें सुनने आते।
- इन सभाओं में गांधीजी ने स्वराज का अर्थ स्पष्ट किया और कहा कि लोग अंग्रेजों की शांतिपूर्वक अवज्ञा करें यानी अंग्रेज़ों का कहा न मानें।
- 6 अप्रैल, 1930 को वह दांडी पहुँचे और उन्होंने समुद्र का पानी उबालकर नमक बनाना शुरू कर दिया। यह कानून का उल्लंघन था।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



नमक यात्रा के दौरान गाँधीजी के साथ 78 सहयोगी गये थे। रास्ते में हजारों लोग इस यात्रा में जुड़ते चले गये।

सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

- यहीं से अब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू होता है।
- यह आंदोलन असहयोग आंदोलन से भिन्न था क्योंकि इसमें अंग्रेज़ों का सहयोग न करने के साथ-साथ क़ानूनों का उल्लंघन करने के लिए भी कहा गया था।
- देश के विभिन्न भागों में हज़ारों लोगों ने

(i) नमक कानून तोड़ा, और सरकारी नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन किए।
(ii) विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया जाने लगा।
(iii) शराब की दुकानों की पिकेटिंग होने लगी।
(iv) किसानों ने लगान और चौकीदारी कर चुकाने से इनकार कर दिया।
(v) गाँवों में तैनात कर्मचारी इस्तीफ़े देने लगे।
(vi) जंगलों में रहने वाले लोग वन कानूनों का उल्लंघन करने लगे। वे लकड़ी बीनने और मवेशियों को चराने के लिए आरक्षित वनों में घुसने लगे।

- इन घटनाओं से चिंतित औपनिवेशिक सरकार कांग्रेसी नेताओं को गिरफ़्तार करने लगी। बहुत सारे स्थानों पर हिंसक टकराव हुए।
- अप्रैल 1930 में जब महात्मा गांधी के समर्पित साथी अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार किया गया तो गुस्साई भीड़ सड़कों पर उतर आई। पुलिस ने गोलियां बरसाई। बहुत सारे लोग मारे गये।
- महीने भर बाद जब महात्मा गांधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया तो शोलापुर के औद्योगिक मज़दूरों ने अंग्रेज़ी शासन का प्रतीक पुलिस चौकियों, नगरपालिका भवनों, अदालतों और रेलवे स्टेशनों पर हमले शुरू कर दिए।
- भयभीत सरकार ने निर्मम दमन का रास्ता अपनाया।
- शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर हमले किए गए, औरतों व बच्चों को मारा-पीटा गया और लगभग एक लाख लोग गिरफ्तार किए गए।



सत्याग्रहियों पर हमला करती पुलिस 1930

- महात्मा गांधी ने एक बार फिर आंदोलन वापस ले लिया।
- 5 मार्च 1931 को उन्होंने इरविन के साथ एक समझौते पर दस्तखत कर दिए। इस समझौते के ज़रिए गांधीजी ने लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में हिस्सा लेने पर अपनी सहमति व्यक्त कर दी।
- इसके बदले सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर राज़ी हो गई।

Download Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- दिसंबर 1931 में सम्मेलन के लिए गांधीजी लंदन गए। यह वार्ता बीच में ही टूट गई और उन्हें निराश वापस लौटना पड़ा।
- यहाँ आकर उन्होंने पाया कि सरकार ने नए सिरे से दमन शुरू कर दिया है।
- गफ्फार ख़ान और जवाहरलाल नेहरू, दोनों जेल में थे।
- कांग्रेस को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था।
- सभाओं, प्रदर्शनों और बहिष्कार जैसी गतिविधियों को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे थे।
- भारी आशंकाओं के बीच महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन दोबारा शुरू कर दिया।
- साल भर तक आंदोलन चला लेकिन 1934 तक आते-आते उसकी गति मंद पड़ने लगी थी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन को लोगों ने कैसे लिया?

- इस आंदोलन में शामिल विभिन्न सामाजिक समूह कौन से थे?
- उन्होंने आंदोलन में हिस्सा क्यों लिया?
- उनके आदर्श क्या थे?
- उनके लिए स्वराज के क्या मायने थे?

आइये देखें :-

गाँवों के सम्पन्न किसान :-

- गाँवों में संपन्न किसान समुदाय-जैसे गुजरात के पाटीदार और उत्तर प्रदेश के जाट-आंदोलन में सक्रिय थे।
- वे व्यावसायिक फसलों की खेती करते थे जिनकी गिरती कीमतों से वे बहुत परेशान थे।
- जब उनकी नकद आय खत्म होने लगी तो उनके लिए सरकारी लगान चुकाना नामुमकिन हो गया।
- सरकार लगान कम करने को तैयार नहीं थी। चारों तरफ असंतोष था।
- संपन्न किसानों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का बढ़-चढ़ कर समर्थन किया।
- उनके लिए स्वराज की लड़ाई भारी लगान के खिलाफ लड़ाई थी।
- लेकिन जब 1931 में लगानों के घटाये बिना आंदोलन वापस ले लिया गया तो उन्हें बड़ी निराशा हुई।
- फलस्वरूप, जब 1932 में आंदोलन दुबारा शुरू हुआ तो उनमें से बहुतों ने उसमें हिस्सा लेने से इनकार कर दिया।

गरीब किसान :-

- किसान जमींदारों से पट्टे पर जमीन लेकर यानी भाड़े पर जमीन करते थे।
- महामंदी लंबी खिंचने तथा आमदनी गिरने से जमीन का किराया चुकाना भी मुश्किल हो गया।
- वे ज़मींदारों से भाड़ा माफ कराना चाहते थे।
- इसके लिए उन्होंने कई रेडिकल आंदोलनों में हिस्सा लिया जिसका नेतृत्व अक्सर समाजवादियों और कम्युनिस्टों के हाथों में होता था।
- लेकिन अमीर किसानों और ज़मींदारों की नाराज़गी के भय से कांग्रेस 'भाड़ा विरोधी' आंदोलनों को समर्थन देने से हिचकिचाती थी।
- इसी कारण गरीब किसानों और कांग्रेस के बीच संबंध अनिश्चित बने रहे।

Download Mission Cyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

व्यवसायी वर्ग :-

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय उद्योगपतियों ने भारी मुनाफा कमाया था इसलिए वे ताकतवर हो चुके थे।
- लेकिन कई औपनिवेशिक नीतियों के कारण उनके व्यवसाय में रुकावट आती थी।
- वे रुपया-स्टर्लिंग अनुपात में बदलाव चाहते थे जिससे विदेशी वस्तुओं का आयात कम हो।
- अपने व्यावसायिक हितों की रक्षा के लिए उन्होंने -
  (i) भारतीय औद्योगिक एवं व्यावसायिक कांग्रेस (1920)
  (ii) भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ (1927) का गठन किया।
- पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और जी.डी. बिड़ला जैसे उद्योगपतियों के नेतृत्व में उद्योगपतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण का विरोध किया।
- उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन करते हुए आंदोलन को आर्थिक सहायता दी तथा आयातित वस्तुओं को खरीदने या बेचने से इनकार कर दिया।
- ज्यादातर व्यवसायी स्वराज को एक ऐसे रूप में देखते थे जहाँ कारोबार पर औपनिवेशिक पाबंदियाँ नहीं होंगी और व्यापार व उद्योग निर्बाध ढंग से फल-फूल सकेंगे।
- लेकिल गोलमेज़ सम्मेलन की विफलता के बाद व्यावसायिक संगठनों का उत्साह भी मंद पड़ गया था।

श्रमिक वर्ग :-

- औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में नागपुर के अलावा और कहीं भी बहुत बड़ी संख्या में हिस्सा नहीं लिया।
- जैसे-जैसे उद्योगपति कांग्रेस के नज़दीक आ रहे थे, मज़दूर कांग्रेस से छिटकने लगे थे।
- फिर भी, कुछ मज़दूर कम वेतन व खराब कार्यस्थितियों के खिलाफ आंदोलन से जुड़ गये थे।
- 1930 में रेलवे कामगारों की और 1932 में गोदी कामगारों की हड़ताल हुई।
- कांग्रेस अपने कार्यक्रम में मज़दूरों की माँगों को समाहित करने में हिचकिचा रही थी। क्योंकि उसे उद्योगपतियों के आंदोलन से दूर चले जाने का डर था।

महिलाऐं :-

- सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं ने बड़े पैमाने पर भाग लिया।
- गांधीजी के नमक सत्याग्रह के दौरान हज़ारों औरतें उनकी बात सुनने के लिए घर से बाहर आ जाती थीं।
- महिलाओं ने जुलूसों में हिस्सा लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों व शराब की दुकानों की पिकेटिंग की।
- बहुत सारी महिलाएँ जेल भी गईं।
- शहरों में ऊँची जातियों की महिलाएँ सक्रिय थीं जबकि ग्रामीण इलाक़ों में संपन्न किसान परिवारों की महिलाएँ आंदोलन में हिस्सा ले रही थीं।
- गांधीजी के आह्वान के बाद औरतों को राष्ट्र की सेवा करना अपना पवित्र दायित्व दिखाई देने लगा

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

था।

- इस प्रकार से सार्वजनिक भूमिका में आ जाने के बाद भी औरतों की स्थिति में कोई भारी बदलाव नहीं आया। गांधीजी का मानना था कि घर चलाना, चूल्हा-चौका सँभालना, अच्छी माँ व अच्छी पत्नी की भूमिका ही औरतों का असली कर्त्तव्य है।
- इसीलिए लंबे समय तक कांग्रेस संगठन में किसी भी महत्त्वपूर्ण पद पर औरतों को जगह देने से हिचकिचाती रही।
- कांग्रेस को उनकी प्रतीकात्मक उपस्थिति में ही दिलचस्पी थी।



राष्ट्रवादी जुलूसों में औरतें भी शामिल थीं।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महिलाओं कीसहभागिता

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here